आचार्य छत्तीसी-साधु परमेष्ठी
विधान एवं दीप अर्चना

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	आचार्य छत्तीसी-साधु परमेष्ठी विधान एवं दीप अर्चना
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना 9425128817
संस्करण	:	प्रथम, ११०० प्रतियाँ
कवर-पृष्ठ	:	प्राची जैन शिवपुरी
प्रसंग	:	२२वाँ चातुर्मास, २०२०, शिवपुरी
लागत मूल्य	:	१५/-
प्रकाशक	:	श्री जैनोदय विद्या समूह
प्राप्ति स्थान	:	१. संजीव कुमार जैन 2/251 सुहाग नगर, फिरोजाबाद (उ.प्र.) सम्पर्क–9412811798, 9412623916 २. निखिल, सुशील जैन करैरा, झाँसी 9806380757, 9407202065
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

श्री सुनीलकुमार-श्रीमती प्रीती जैन

सुमी, राशि, आगम जैन

बसार वाले, बबीना केन्ट (उ.प्र.)

अन्तर्भाव

''आचार्य छत्तीसी-साधु परमेष्ठी विधान एवं दीप अर्चना'' यह कृति संयम **स्वर्ण महोत्सव मण्डित संतशिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज** के **परम प्रभावक, कविहृदय, अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत शिष्य मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज** के द्वारा तैयार की गई है। इस कृति में आचार्य एवं साधु परमेष्ठी के गुणों को मुनि श्री ने बहुत ही मधुर एवं सरल शैली में प्रस्तुत किया है। जिसका संकलन एवं संयोजन करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। मुनिश्री ने गुरुभक्ति करने का यह एक अद्‌भुत सोपान प्रदान किया है।

मुनिश्री की १०० से अधिक कृतियाँ हैं जिनमें विधान-पूजा, कहानी, आरती, भजन, नाटक, मुक्तक, कविताएँ आदि सम्मिलित हैं। आपके विधानों में चारों अनुयोगों के विषय समावेश हैं। विधान करते समय ऐसा लगता है कि हम भगवान की भक्ति करने के साथ-साथ स्वाध्याय कर रहे हों। ऐसा प्रतीत होता है कि जो बातें यहाँ कही गईं हैं वे सब बातें हमारे आस-पास के वातावरण में समाविष्ट हैं। सिद्धान्त की बात को भी बड़ी ही सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। इस विधान को ३६ दीप/अर्घ्यों तथा २८ दीप/अर्घ्यों के साथ अथवा १ दीप के साथ भी कर सकते हैं।

राजेश, अशोक, अर्चित, पुनीत, नमन, विशाल, रूपेश, सौरभ, रौनक, पीयूष, अभिषेक, रोहित, कलश पाठशाला की बहिनें प्राची, ऐश्वर्या, चाहना, आशी, स्वाति, खुशी, प्रतिभा, रूपाली आदि लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा. ब्र. संजय, मुरैना

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।

जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री आचार्य छत्तीसी विधान

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः - ४

(जोगीरासा)

वर्तमान के वर्धमान जो, चतुर्संघ के स्वामी।
जैन-धर्म के संचालक हैं, शास्त्रों के विज्ञानी॥
जो छत्तीस मूलगुण धारें, शिक्षा-दीक्षा दाता।
परम पूज्य आचार्य श्री को, हो नमोऽस्तु नत माथा॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः - ४

जो पर्याय धर्म की हैं वे, सबको धर्म सिखाएँ।
अपनी छत्र-छाँव देकर के, मोक्षमार्ग झलकाएँ॥
धर्म अहिंसा परमो धर्मः, जग को दें हतिकारी।
सो आचार्य महा गुरुओं को, सादर धोक हमारी॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः - ४

जो प्रकाश में कभी न आते, दे प्रकाश खुश होते।
ज्ञान ध्यान विज्ञानमयी जो, मौन मुखर भी होते॥
कथन रहे श्लोक सूत्र सम, जिनका लेखन दर्शन।
सुव्रत के आचार्य श्री का, शास्त्र मंत्र है जीवन॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः - ४

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कणकण मंगल क्षणक्षण मंगल, जनजन मंगल होवे।
आचार्यश्री को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः - ४

(पुष्पांजलिं...)

श्री आचार्य छत्तीसी पूजन

स्थापना

(हरिगीतिका)

जो मूलगुण छत्तीस धारें, भक्तजन के ईश हैं।
आदर्श दीक्षा दण्ड शिक्षा, ज्ञान दें आशीष दें॥
मध्यम रहे परमेष्ठी अपने, धर्म के आधार हैं।
आचार्य श्री की कर विनय हम, कर रहे सत्कार हैं॥

(दोहा)

श्रद्धालय में आइए, परम पूज्य आचार्य।
हम नमोऽस्तु करके करें, पूजन का शुभ कार्य॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(माता तू दया...)

जो जन्म मृत्यु दुख दे, वो भव बन्धन छोड़े।
निर्मल जल सम बनने, ले दीक्षा पथ मोड़े॥
मुनि महाव्रती पूजें, हमको भी दो आश्रय।
आचार्य श्री को हम, करते नमोऽस्तु सविनय॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

संसार ताप जो दे, वो जग परिवार तजे।
चंदन सम शीतलता, पाने गुरु चरण भजे॥
हम पाँच समिति पूजें, हमको भी दो आश्रय।
आचार्य श्री को हम, करते नमोऽस्तु सविनय॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जो दर-दर भटकाए, वो भव के पथ त्यागी।
अक्षत सम अक्षय हों, सो मोक्षमार्ग रागी॥

जय पंचेन्द्रिय भजलें, हमको भी दो आश्रय।
आचार्य श्री को हम, करते नमोऽस्तु सविनय॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

निज रमणी वरने को, तुम बने दिगम्बर हो।
सो ब्रह्म पुष्प तुम सम, क्या कोई निरम्बर हो॥
हम दसलक्षण भजलें, हमको भी दो आश्रय।
आचार्य श्री को हम, करते नमोऽस्तु सविनय॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सब खाने को जीते, तुम जीने को खाते।
षट्-रस के भोग तजे, आतम रस को ध्याते॥
हम भजें तपस्वी तप, हमको भी दो आश्रय।
आचार्य श्री को हम, करते नमोऽस्तु सविनय॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

जग चकाचौंध में सब, कुछ पाने को झपटे।
तुम ज्ञान-ज्योति पाने, गुरु-चरणों से लिपटे॥
हम तीन गुप्ति पूजें, हमको भी दो आश्रय।
आचार्य श्री को हम, करते नमोऽस्तु सविनय॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

संयम के ले हथियार, चारित्र कवच पहने।
जय कर्म करण निकले, हो मुक्तिवधू वरने॥
षट्-आवश्यक पूजें, हमको भी दो आश्रय।
आचार्य श्री को हम, करते नमोऽस्तु सविनय॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

सांसारिक चाह नहीं, सो गुरु निर्ग्रन्थ हुए।

पाने को मोक्ष महल, गुरुवर आदर्श हुए॥
हम मूलगुणी पूजें, हमको भी दो आश्रय।
आचार्य श्री को हम, करते नमोऽस्तु सविनय॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

निज मूल्यांकन करके, आतम अनमोल भजे।
जग काक बीट सम तज, छत्तीसी मंत्र सजे॥
शिक्षा-दीक्षा दाता, हमको भी दो आश्रय।
आचार्य श्री को हम, करते नमोऽस्तु सविनय॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(श्री आचार्य परमेष्ठी के ३६ मूलगुण)

पंचाचार (हाकलिका)

अष्टांगी निर्दोष रहा, दर्श दर्शनाचार कहा।
वह पालन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं दर्शनाचारगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ १॥

अष्टांगी भव से तारे, ज्ञानाचार तत्त्व धारे।
वह पालन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं ज्ञानाचारगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २॥

तेरह विध चारित्र अमल, वो चारित्राचार कमल।
वह पालन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं चारित्राचारगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३॥

बारह विध निर्दोष धरें, तपाचार अरिहन्त कहें।
वह पालन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं तपाचारगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ४॥

जो परिषह उपसर्ग सहें, प्रभु वह वीर्याचार कहें।
वह पालन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं वीर्याचारगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ५॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

जो धार पंचाचार पालें, पालने शिक्षा दिए।
मुनि संघ नायक भव्य जन को, धर्म व्रत दीक्षा दिए॥
आचार्य श्री आदर्श अपने, प्राण हैं कल्याण हैं।
हम अर्घ्य ले करते नमोऽस्तु, चाहते निर्वाण हैं॥

ॐ ह्रूं पंचाचारगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

<u>बारह तप</u> (हाकलिका)

चउ विध का भोजन तज के, करें तपस्या तप करके।
अनशन तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं अनशनतपोगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ६॥

निजी भूख से कम खाना, ऊनोदर यह तप माना।
ऐसा तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं अवमौदर्यतपोगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ७॥

विधि से भोजन या अनशन, वृत्तिपरिसंख्यान वचन।
सम्यक् तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं वृत्तिपरिसंख्यानतपोगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥८॥

षट्-रस त्याग करें भोजन, रसपरित्याग कहें भगवन्।
उत्तम तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं रसपरित्यागतपोगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥९॥

निर्जन में रहना सोना, विविक्त शैय्यासन माना।
साँचा तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं विविक्तशैय्यासनतपोगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥१०॥

तप से तन को दिए सजा, चेतन बगिया लिए सजा।
कायक्लेश आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं कायक्लेशतपोगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥११॥

दोष व्रतों में गर आएँ, निन्दा गर्हा करवाएँ।
प्रायश्चित्त आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं प्रायश्चित्ततपोगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥१२॥

पूज्य जनों का चार तरा, आदर करना विनय कहा।
श्रेष्ठ विनय आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं विनयतपोगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ १३॥

संत त्यागियों की सेवा, मोक्षमार्ग का तप मेवा।
वैयावृत्त आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं वैयावृत्ततपोगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ १४॥

आलस तज अध्याय पढ़ें, पाँच तरह स्वाध्याय करें।
स्वाध्याय तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥

ॐ ह्रूं स्वाध्यायतपोगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ १५॥

तन से पूर्ण ममत्व तजें, परमातम का तत्त्व भजें।
तप व्युत्सर्ग आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥

ॐ ह्रूं व्युत्सर्गतपोगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ १६॥

एक तत्त्व में चित्त धरें, तप का उपसंहार करें।
शुद्ध ध्यान आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥

ॐ ह्रूं ध्यानतपोगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ १७॥

पूर्णार्घ्य

(लय–माता तू दया करके...)

जो बारह तप धर के, ध्यानाग्नि जला रहे।
कर कर्म होम अपनी, आतम को सजा रहे॥
आचार्य श्री जी की, विख्यात तपस्या है।
अर्घ्याचन से होती, हर दूर समस्या है॥

ॐ ह्रूं द्वादशतपोगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

दसलक्षण धर्म (हाकलिका)

कटु वाणी उपसर्ग सहें, निज में उत्तम क्षमा धरें।
क्रोध त्याग आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥

ॐ ह्रूं उत्तमक्षमाधर्मधुरन्धर श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ १८॥

ज्ञानादिक मद त्याग करें, उत्तम मार्दव धर्म धरें।
मान त्याग आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥

ॐ ह्रूं उत्तममार्दवधर्मधुरन्धर श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ १९॥

कथनी करनी एक करें, उत्तम आर्जव धर्म धरें।
कपट त्याग आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमार्जवधर्मधुरन्धर श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ २०॥

लोभ पाप का बाप रहा, शौच धर्म वह घात रहा।
लोभ त्याग आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमशौचधर्मधुरन्धर श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ २१॥

सत्य धर्म की कल्याणी, हित-मित-प्रिय बोलें वाणी।
सत्य कथन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमसत्यधर्मधुरन्धर श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ २२॥

इन्द्रिय जीव सुरक्षा को, चरणाचरण व्यवस्था को।
शुभ संयम आचार्य धरें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमसंयमधर्मधुरन्धर श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ २३॥

इच्छा पूर्ण निरोध करें, कर्म निर्जरा शोध करें।
उत्तम तप आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमतपधर्मधुरन्धर श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ २४॥

दोनों परिग्रह त्याग करें, नग्न हुए वैराग्य धरें।
श्रेष्ठ त्याग आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमत्यागधर्मधुरन्धर श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ २५॥

पर का कुछ ना अपना हो, अपना कुछ ना पर का हो।
आकिंचन आचार्य धरें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमआकिंचन्यधर्मधुरन्धर श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ २६॥

ब्रह्मचर्य व्रतराज रहा, ब्रह्मरमण साम्राज्य कहा।
ब्रह्मचर्य आचार्य धरें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मधुरन्धर श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ २७॥

पूर्णार्घ्य (शंभु)

जो आत्म धर्म को प्रकटाने, दसलक्षण धर्म ध्वजा धारें।
हैं महापर्व जिनशासन के, भक्तों का जीवन शृंगारें॥
व्यवहार धर्म निर्दोष धरें, निश्चय पाने पुरुषार्थ करें।
आचार्य श्री सम धर्म मिले सो, करके नमोऽस्तु अर्घ्य धरें॥

ॐ ह्रूं दसधर्मधुरन्धर श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

<u>षट्-आवश्यक</u> (हाकलिका)

समता धरें सदा मन से, सुख-दुख आदिक के क्षण में।
सामायिक आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं सामायिकगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ २८॥

इक जिनवर के गुण गाना, उसे वन्दना पहचाना।
आवश्यक आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं वन्दनागुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ २९॥

चौबीसों प्रभु की गाथा, कहना झुका-झुका माथा।
वो स्तवन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं स्तवनगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ३०॥

भूतकाल जो दोष हुए, प्रतिक्रमण से दूर हुए।
वही शुद्ध आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं प्रतिक्रमणगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ३१॥

दोष हो सकें आगे जो, उन्हें पूर्व ही त्यागे जो।
प्रत्याख्यान आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं प्रत्याख्यानगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ३२॥

तन ममता तज निज ध्यानी, कायोत्सर्ग करें स्वामी।
आवश्यक आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं कायोत्सर्गगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ३३॥

पूर्णार्घ्य (विष्णु)

षट्-आवश्यक रोज पालकर, निश्चय क्रिया करें।
निज कर्तव्य पालने सबको, प्रेरित सदा करें॥
अवश करें सो अवश बनें हम, दो ऐसी शिक्षा।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, गुरुवर दो दीक्षा॥

ॐ ह्रूं षडावश्यकगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

तीन गुप्तियाँ (हाकलिका)

मन विकल्प रोकें सारे, मनोगुप्ति गुरुवर धारें।
निज रक्षा आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं मनोगुप्तिगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ३४॥

सभी वचन तज मौन धरें, वचन गुप्ति संग्राम हरें।
स्व-पर दया आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥

ॐ ह्रूं वचनगुप्तिगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ३५॥

तन व्यापार तजें सारे, काय गुप्ति मुद्रा धारे।
निज को जिन आचार्य करें, नमोऽस्तु हम तो भक्त करें॥

ॐ ह्रूं कायगुप्तिगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ३६॥

पूर्णार्घ्य (जोगीरासा)

मनो वचन काया की गुप्ति, धर कर ध्यान लगाएँ।
कायोत्सर्ग दिगम्बर मुद्रा, पर हम भी ललचाएँ॥
बाहुबली सम धार गुप्तियाँ, हम भी समता धारें।
अर्घ्य चढ़ा आचार्य श्री को, मन मंदिर में धारें॥

ॐ ह्रूं त्रिगुप्तिगुणसुशोभित श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

सम्पूर्णार्घ्य

(ज्ञानोदय)

नख से शिख तक मूलगुणों की, मणियों से जो शोभित हैं।
परमपूज्य आचार्य श्री जी, शिष्यवर्ग से पूजित हैं॥
संत शिरोमणि भक्त प्राण हैं, करते धर्म जयोऽस्तु हैं।
भाव भक्ति से अर्घ्य चढ़ाकर, अपने रोज नमोऽस्तु हैं॥

(दोहा)

जिनपथ गुरु आचार्य दें, गुण धारें छत्तीस।
त्याग तपस्या कार्य को, हो नमोऽस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रूं श्री षट्त्रिंशतगुणसुशोभित आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः सम्पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(ज्ञानोदय)

जगत श्रेष्ठ जो आत्म गुणों में, परम पूज्य पद स्थित हैं।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र जिन्हें सब, पूज रहे नतमस्तक हैं॥
इन पाँचों परमेष्ठी प्रभु में, जो परमेष्ठी मध्यम हैं।
परम पूज्य आचार्य श्री जी, हम भक्तों के भगवन हैं॥१॥
जो शिष्यों को शिक्षा-दीक्षा, प्रायश्चित्त प्रदायक हैं।
दर्शन ज्ञान वीर्य चरित्र तप, पंचाचार सुसाधक हैं॥
जो छत्तीस मूलगुण धारें, श्रमण संघ के नायक हैं।
भव्य प्राणियों के संरक्षक, सम्यक् धर्म विधायक हैं॥२॥
आज नहीं अरिहन्त सिद्ध हैं, लेकिन उनके बिम्ब मिलें।
कर आचार्यश्री के दर्शन, उपाध्याय मुनि साधु मिलें॥
अतः आज आचार्यश्री जी, परमेष्ठी सर्वोत्तम हैं।
धर्म पालते व पलवाते, ध्याते निज शुद्धातम हैं॥३॥
व्यसन पाप अन्याय कर्म से, रहकर दूरदूर रखते।
पिता तुल्य आचार्य श्री जी, शरणा मिले भाव रखते॥
कभी नजर ना लगे गुरु को, लेकिन हम पर नजर रहे।
'विद्या' के 'सुव्रत' यह चाहें, धर्म लहर गुरु खबर रहे॥४॥

(सोरठा)

परम पूज्य आचार्य, धर्म ध्वजा आधार हैं।
कर नमोऽस्तु शुभ कार्य, करते हम सत्कार हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

आचार्य श्री स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, आचार्य श्री गुरुराय॥
(पुष्पांजलिं...)

===

महिमा—श्री आचार्य परमेष्ठी

आचार्य श्री का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से ठाठ से से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी॥
आचार्य श्री आगम ज्ञानी, मुनि चतुर्संघ के गुरु स्वामी।
हैं शिक्षा दीक्षा दण्ड प्रदाता ध्यानी, गुरु भक्तों को वरदानी॥
आचार्य श्री का पाठ...॥१॥
छत्तीस मूलगुण के धारी, श्री जिनशासन के अधिकारी।
हैं नग्न दिगम्बर वैरागी उपकारी, जिनकी है महिमा न्यारी॥
आचार्य श्री का पाठ...॥२॥
गुरु सिद्धों सम ज्ञाता-दृष्टा, अरिहन्त समान हैं युग-सृष्टा ।
हैं उपाध्याय सम शास्त्रों के भण्डारी, मुनि साधु सम अनगारी॥
आचार्य श्री का पाठ...॥२॥
दो चरण-शरण हमको शिक्षा, बस यही हमारी है इच्छा।
सो 'सुव्रत' करके सारी सफल परीक्षा, लें मुक्तिवधू से दीक्षा॥
आचार्य श्री का पाठ...॥३॥

===

आरती—श्री पंचपरमेष्ठी

जिनवर की बोलो जय-जय रे, आरतिया उतारो।
हाँ-हाँ रे...आरतिया उतारो॥

१. पहली आरती श्रीजिनराजा, भवदधि पार उतार जहाजा।
२. दूसरी आरती सिद्धन केरी, सुमरन करत मिटै भव फेरी।
३. तीसरी आरती सूरि मुनिन्दा, जनम-मरण दुख दूर करिन्दा।
४. चौथी आरती श्री उवझाया, दर्शन देखत पाप पलाया।
५. पाँचवी आरती साधु तिहारी, कुमति विनाशन शिव अधिकारी।

===

आरती—श्री आचार्य परमेष्ठी

(लय—छूम छूम छना नना बाजे...)

छूम-छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा, करूँ आरतिया- छूम-छूम...॥
परम पूज्य आचार्य हमारे, जो छत्तीस मूलगुण धारे।
पंचाचार संभालें, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥१॥
मध्यम परमेष्ठी व्रत दाता, शिक्षा-दीक्षा दण्ड प्रदाता ।
चरण-शरण सुखदाई , बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥२॥
धर्म पालते वा पलवाते, अपनी शुद्धातम को ध्याते ।
जग के दोष नशाएँ, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥३॥
महापिता आचार्य दिगम्बर, दे दो हमको ज्ञान सम्मुन्दर ।
सुन लो अरज हमारी, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥४॥
रत्नत्रय दो हमको स्वामी, हों अरिहन्त सिद्ध आगामी ।
यह आशीष हमें दो, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥५॥
हमें गुरु आचार्य निहारो, निज सम आतम भाग्य सँवारो।
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥६॥

===

साधु परमेष्ठी विधान

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः - ४

(जोगीरासा)

पूज्य पंच परमेष्ठी में जो, महा मूलपद होता।
जिनशासन के परिचय में जो, बीज हृदय में बोता॥
जिसके बिना न होती समाधि, कभी न हो निर्वाण।
नग्न दिगम्बर साधु वही हैं, जैन धर्म के प्राण॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः - ४

जिनके अंतर नयनों में नित, सम्यग्दर्शन होता।
वाणी में जिनवाणी आगम, शास्त्र मोह को खोता॥
चर्या में चारित्र सदा हों, रत्नत्रय के मेले।
साधु देवता हैं धरती के, अरिहन्तों के चेले॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः - ४

निर्मोही सबका मन मोहें, वैरागी निजरागी।
हैं निर्ग्रन्थ रचें ग्रन्थों को, निजलोभी जगत्यागी॥
चलते फिरते तीर्थ साधु हैं, आतमघट के वासी।
सो 'विद्या' के 'सुव्रत' नित ही, साधु स्वरूप निवासी॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः - ४

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कणकण मंगल क्षणक्षण मंगल, जनजन मंगल होवे।
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु कर, जग का मंगल होवे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः - ४

(पुष्पांजलिं...)

साधु परमेष्ठी पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय)

णमोकार के परमेष्ठी हैं, धर्म ध्वजा फहराय रहे।
नग्न दिगम्बर साधु हमारे, जिनशासन शृंगार रहे॥
सर्व साधु परमेष्ठी पूजन, भाव भक्ति से रचा रहे।
नेत्र द्वार से हृदय कमल पर, हम श्रद्धा से बुला रहे॥

(दोहा)

भक्त नमोऽस्तु कर करें, विनय प्रार्थना आज।
आह्वानन स्वीकारिए, हे! साधु महाराज॥

ॐ ह्रः साधु परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(हकलिका)

जन्म मृत्यु का दुख हरने, व्रत संयम धारण करने।
हम भी जल से पूजें आज, जय-जय हो साधु महाराज॥

ॐ ह्रः साधु परमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

भव की ताप तपन हरने, साधु स्वरूप ग्रहण करने।
हम चंदन से पूजें आज, जय-जय हो साधु महाराज॥

ॐ ह्रः साधु परमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

भूल भुलैया दुख तजने, छत्र-छाँव मुनि की भजने।
हम अक्षत से पूजें आज, जय-जय हो साधु महाराज॥

ॐ ह्रः साधु परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

काम बाण निष्फल करने, ब्रह्म बाग हरियल करने।
हम पुष्पों से पूजें आज, जय-जय हो साधु महाराज॥

ॐ ह्रः साधु परमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

शुद्धातम का रस चखने, पुद्गल के व्यंजन तजने।
नेवेद्यों से पूजें आज, जय-जय हो साधु महाराज॥

ॐ ह्रः साधु परमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

आत्म ज्योति प्रकटाने को, मोह-अन्ध नशवाने को।
हम दीपक से पूजें आज, जय-जय हो साधु महाराज॥

ॐ ह्रः साधु परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्म युद्ध पर जय पाने, पिच्छी कमण्डल अपनाने।
हम धूपों से पूजें आज, जय-जय हो साधु महाराज॥

ॐ ह्रः साधु परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

केवल एक यही इच्छा, सार्थक सफल करें दीक्षा।
हम भी फल से पूजें आज, जय-जय हो साधु महाराज॥

ॐ ह्रः साधु परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

नग्न दिगम्बर मुनि रूपा, सर्व पूज्य सुख चिद्-रूपा।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजें आज, जय-जय हो साधु महाराज॥

ॐ ह्रः साधु परमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(श्री साधुपरमेष्ठी के २८ मूलगुण)

पंच महाव्रत (सखी)

सब हिंसा पाप निवारी, अहिंसा महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रः अहिंसामहाव्रतधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ १॥

सब झूठ पाप संहारी, मुनि सत्य महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रः सत्यमहाव्रतधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २॥

सब चोरी पाप निवारी, जो अचौर्य महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रः अचौर्यमहाव्रतधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३॥

निज रसिया त्यागे नारी, ब्रह्मचर्य महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रः ब्रह्मचर्यमहाव्रतधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४॥

जो परिग्रह मूर्च्छा हारी, अपरिग्रह महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रः अपरिग्रहमहाव्रतधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ५॥

पूर्णार्घ्य (शंभु)

जो नग्न दिगम्बर मुनिवर हैं, जो पाँच महाव्रत धारी हैं।
जो पाप बुराई के त्यागी, अपने सबके हितकारी हैं॥
जो रहे देवता धरती के, जिनशासन की ध्वज उड़ा रहे।
हम णमो लोए सव्वसाहूणं, की अर्घ्य अर्चना रचा रहे॥

ॐ ह्रः पंचमहाव्रतधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

पंच समितियाँ (सखी)

मुनि निरख-निरख कर चालें, मुनि भाषा समिति पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रः ईर्यासमितिधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ६॥

मुख व्यर्थ न अपना खोलें, मुनि भाषा समिति पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रः भाषासमितिधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ७॥

रसपान शुद्ध कुछ करलें, सो एषणा समिति पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रः एषणासमितिधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ८॥

लें वस्तु देख या धर लें, आदान निक्षेपण पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः आदाननिक्षेपणसमितिधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ९॥

मल-मूत्र विधिवत् तज लें, व्युत्सर्ग समिति जो पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रः व्युत्सर्गसमितिधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ १०॥

पूर्णार्घ्य

(लय—माता तू दया करके...)

व्यापार त्याग दुख के, जो सुख को चाह रहे।
हो विश्व शांति जिनके, यों मंगल भाव रहे॥
जो समिति पाँच पालें, वे हमें पवित्र करें।
हम सर्व साधुओं को, कर नमोऽस्तु अर्घ्य धरें॥

ॐ ह्रः पंचसमितिधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

पंचेन्द्रियनिरोध (सखी)

स्पर्शन आठविध जीतें, शुद्धातम छूना सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः स्पर्शनेन्द्रियविषय विजेता श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ११॥

रस पाँच तरह के जीतें, परमात्मा चखना सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः रसनेन्द्रिय विषय विजेता श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ १२॥

दुर्गन्ध सुगन्धी जीतें, चारित्र सूंघना सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः घ्राणेन्द्रियविषयविजेता श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ १३॥

पचरंगा दर्शन जीतें, निज सम्यग्दर्शन सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः चक्षुरिन्द्रयविषयविजेता श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ १४॥

स्वर सात तरह के जीतें, संगीत आत्म का सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः कर्णेन्द्रियविषयविजेता श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ १५॥

पूर्णार्घ्य

(जोगीरासा)

पाँच इन्द्रियों के विषयों के, राग-द्वेष जो छोड़े।
देहातीत अवस्था पाने, निज से नाता जोड़े॥
इन्द्रिय कर्म विजेता साधु, अपने प्राण सहारे।
करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ाकर, हमने पाँव पखारे॥

ॐ ह्रः पंचेन्द्रियविषयविजेता श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

षट्-आवश्यक (सखी)

जो सब में समता धारें, निज शुद्ध स्वरूप विचारें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः सामायिक-आवश्यकगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१६॥

गुण येक प्रभु के गाएँ, थुति करके पुण्य बढ़ाएँ।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः स्तुति-आवश्यकगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ १७॥

गुण चौबीसों के गाना, मुनि करें वन्दना नाना।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः वन्दना-आवश्यकगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ १८॥

पिछले दोषों को हरते, सो प्रतिक्रमण मुनि करते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः प्रतिक्रमण-आवश्यकगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१९॥

अगले दोषों को हर लें, सो प्रत्याख्यान नियम लें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः प्रत्याख्यानआवश्यकगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२०॥

निज तन से मोह नशाएँ, जो कायोत्सर्ग रचाएँ।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः कायोत्सर्ग-आवश्यकगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२१॥

पूर्णार्घ्य (शुद्ध गीता)

दिगम्बर साधु की चर्या, कभी भी ना बदलती है।
परीषह और उपसर्गों, इन्हीं में रोज ढलती हैं॥
करें जो रोज आवश्यक, जिन्हें पाना स्ववस्तु को।
उन्हीं की अर्चना करके, उन्हें अपने नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रः षडावश्यकगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

सात अन्य गुण (सखी)

कुछ निशि में तृण पर सोना, या भू पर त्याग बिछौना।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः भूशयनमूलगुणधारकश्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २२॥

नहिं मुनिजन कभी नहाते, शृंगार करें न कराते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः अस्नानमूलगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २३॥

मुनि नग्न दिगम्बर रहते, उपसर्ग परीषह सहते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रः नग्नत्वमूलगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २४॥

दातून करें न मंजन, मुनि धरते अदंतधावन।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः अदन्तधावनमूलगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २५॥

इक बार करें मुनि भोजन, दिन में विधिवत् कर शोधन।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रः एकभुक्तिमूलगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २६॥

मुनि मौन खड़े हो खाएँ, आसक्ति दोष नशाएँ।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः एकाशनमूलगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २७॥

मुनि बाल सजाना तजते, केशलौंच दयालु करते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोऽस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः केशलौंचमूलगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु के, लाड़ले जो साधु हैं।
निर्मोह सबका मोह के मन, चेतना के स्वादु हैं॥
जो तीर्थ चलते और फिरते, धन्य हैं जयवंत हैं।
हम अर्घ्य ले उनको भजें जो, साधु मुनि भगवंत हैं॥

ॐ ह्रः सप्तशेषमूलगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

सम्पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

जैन धर्म की आतम हैं जो, भक्तजनों के प्राण रहे।
ज्ञान-ध्यान-तप लीन तपस्वी, आगामी निर्वाण रहे॥
चलते-फिरते तीरथ हैं जो, शुद्धातम को ध्याते हैं।
पूज्य साधु परमेष्ठी को हम, सादर अर्घ्य चढ़ाते हैं॥

(दोहा)

धर्मध्वजा मुनि साधु हैं, गुणधर अट्ठाबीस।
राग त्याग वैराग्य को, हो नमोऽस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रः अष्टाविंशतिमूलगुणधारक श्री साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः सम्पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला (ज्ञानोदय)

जो अंतिम परमेष्ठी पद पर, ज्ञानी ध्यानी स्थित हैं।
त्याग चुके आरम्भ परिग्रह, विषयों की आशा जित हैं॥
अट्ठाईस मूलगुण धारी, परम तपस्वी साधक हैं।
जिनशासन के पता पताका, मोक्षमार्ग आराधक हैं॥१॥
नग्न दिगम्बर मुद्रा धारी, पिच्छी कमण्डल धारी हैं।
परमेष्ठी के मूलस्तम्भ हैं, जैन धर्म अधिकारी हैं॥
ऋषि मुनि यति अनगार श्रमण ये, नाम साधुओं के होते।
मुनि-दर्शन तो बड़े पुण्य से, भव्य प्राणियों को होते॥२॥
साधु बिना अरिहन्त सिद्ध पद, प्राप्त नहीं हो सकता है।
सर्व साधुओं की पूजा की, सो परमावश्यकता है॥
जैनधर्म का सार्वभौम पद, इस बिन कब कल्याण हुआ।
साधु की ही होती समाधि, साधु को निर्वाण हुआ॥३॥
परमेष्ठी से यही प्रार्थना, साधु के व्रत सु-व्रत हों।
साधु धर्म से आज विश्व के, दूर सभी दुख संकट हों॥
साधु नहीं यदि बन सकते तो, करो साधुओं की सेवा।
'विद्या' के 'सुव्रत' यह चाहें, साधु दान दें निज मेवा॥४॥

(सोरठा)

साधुरूप सुखकार,भाव भक्ति से हम भजें।
मिले मुक्ति का हार, धारण कर 'सुव्रत' सजें॥

ॐ ह्रः साधु परमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

साधु परमेष्ठी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्रीसाधु मुनिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा—श्री साधु परमेष्ठी

श्री साधु मुनि का पाठ, करो दिन रात ठाठ से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी॥
मुनि साधु परम परमेष्ठी जी, जिनको झुकते जगश्रेष्ठी भी।
हैं जिनशासन के पता पताका स्वामी, हों सिद्ध शीघ्र आगामी॥ श्री...॥१॥
अट्ठाईस मूलगुण के धारी, हैं नग्न दिगम्बर अनगारी।
ले पिच्छी कमण्डल चलते तीर्थ विहारी, निजरमणी के अधिकारी॥ श्री...॥२॥
जो ज्ञान ध्यान में लीन रहें, शुद्धातम में आसीन रहें।
हों कमलासीन जगत में बन वैरागी, संसार कर्म के त्यागी॥ श्री...॥३॥
हम बनें वीतरागी साधु, सब त्याग सकें जग के जादु।
फिर 'सुव्रत' बनके मुक्तिवधू आराधू, हों निजानंद के स्वादु॥ श्री...॥४॥

आरती—श्री साधुपरमेष्ठी

(लय—छूम छूम छना नना बाजे...)

छूम-छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा, करूँ आरतिया- छूम-छूम...॥
पूज्य साधु परमेष्ठी न्यारे, नग्न दिगम्बर जगत सितारे।
हैं प्राणों से प्यारे, बाबा करूँ आरतिया - छूम-छूम....॥१॥
जो अट्ठाईस मूलगुण धारी, ज्ञानी ध्यानी जग हितकारी।
पिच्छी कमण्डल धारी, बाबा करूँ आरतिया - छूम-छूम....॥२॥
जिनशासन के पता पताका, रत्नत्रय शुद्धातम ध्याता।
दया धर्म रखवाले, बाबा करूँ आरतिया - छूम-छूम....॥३॥
अरिहन्तों के हैं अनुगामी, जगत हितैषी सबके स्वामी।
'सुव्रत' के वरदानी, बाबा करूँ आरतिया - छूम-छूम....॥४॥

===